पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-४० सोमवार, २५ मई २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

केंद्रीय कैबिनेट में हिमाचल को आनंद

पहली बार कांग्रेस ने देश की कैबिनेट में हिमाचल प्रदेश को स्थान दे तो दिया है, लेकिन यह सम्मान राय के बजाय आनंद शर्मा का निजी माना जा रहा है। गांधी परिवार के करीबी रहे आनंद के मंत्री बनने से प्रदेश को जहां कई उम्मीदें केंद्र सरकार से बंधी हैं वहीं राय में हाशिए पर जा चुकी पार्टी में धड़ेबाजी और बढ़ने की आशंका है। वरिष्ठ नेता व पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह की मंडी हलके से जीत के बावजूद जिस तरह अनदेखी की गई है, उससे साफ है कि आलाकमान प्रदेश नेतृत्व में बदलाव के संकेत देकर युवाओं को आगे लाने की तैयारी में है। आनंद शर्मा हिमाचल प्रदेश से दूसरी बार रायसभा सांसद हैं और उन्होंने 1982 में शिमला से विधानसभा चुनाव लड़ा था जिसमें वह हार गए थे। रायसभा में उनका मौजूदा कार्यकाल दस महीने शेष है। जाहिर है, मार्च 2010 तक वह हिमाचल प्रदेश से मंत्री के रूप में विराजेंगे लेकिन इसके बाद वह जिस भी राय से रायसभा सांसद बनेंगे तो उसी राय के मंत्री कहलाएंगे, क्योंकि हिमाचल में अब भाजपा की सरकार है।

फिनिक्स सी सकारात्मकता

मैं आपसे नकारात्क विचारों के बारे में कुछ बात करना चाहता हूं। आपीएल में शाहरूख के बयानों ने उसे धरातल पर ला कर खड़ा कर दिया। कप्तानी को लेकर उनके प्रयोग सीधे-सीधे फेल साबित हुए। किसी फील्ड के बारे में सतही ज्ञान से किए प्रयोग उसे ले ही डूबते हैं। हालांकि शाहरूख की टीम इस बार भी ब्रांड वैल्यू के कारण सबसे ज्यादा धनी टीम मानी जा रही है। फिर भी कोलकाता नाइट राइडर्स को सम्मान नहीं मिल पाया। बैंगलौर और हैदराबाद ने अपने जज्बे के बल पर इस आईपीएल सीजन टू में हर आलोचना करने वाले व्यक्ति को अपने पक्ष में आने को मजबूर कर

✍ उत्तम झंवर

दिया। सब दिन होत न एक समान को भी उन्होंने चरितार्थ किया है। दूसरे छोर पर यदि इस बार के पॉलिटिकल थियेटर को देखा जाए तो डमी प्रधानमंत्री कहे जाने वाले मनमोहन ने ही सबका मन मोह लिया। पीएम इन वेटिंग लालकृष्ण आडवाणी को इन दिनों पार्टी के भीतर चलने वाले खासे विरोध का सामना करना पड़ रहा है। वहीं भीतराघात से भी जूझ रहे हैं। सदियों से चले आ रहे राम-रावण के उदाहरण भी इन स्वरूपों में फिर सामने हैं। इस शिक्षा से आने वाले समय में कई बदलाव उस आदमी के हक में होंगे जो लंबे समय से उपेक्षित है। मंदी के कारण तबाह होते निम्न परिवारों ने यही सोच कर मनमोहन में अपना विश्वास जताया है।

सकारात्मक विचार फिनिक्स पक्षी की तरह होते हैं। फिनिक्स पक्षी की खासियत है कि वह जल कर खत्म होता है और अपनी ही राख से फिर से पनप जाता है। सकारात्मकता जीवन में कुछ इसी तरह से है जहां हम सच की राह पर चलते हुए खुद को खत्म मानने लगते हैं वहीं से हमारे नए रास्ते खुल जाते हैं।

मजबूती से शुरु हुई मनमोहक पारी

(दिल्ली ब्यूरो)

घटकदलों और अर्जुनसिंह जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं की नाराजी के बीच मनमोहनसिंह ने अपनी दूसरी पारी की शुरूआत कर दी. चुनाव नतीजों से उत्साहित और समर्थन देने के लिये लाईन लगाये रखे देश के कई राजनीतिक दलों के नेताओं ने कांग्रेस और खासकर मनमोहनसिंह, राहुल एवं सोनिया गांधी को बेपरवाह कर दिया है. जिसके चलते द्रमुक जैसे संप्रग के तीसरे बड़े घटक और नेशनल कांफ्रेंस जैसी महत्वपूर्ण सियासी पार्टी की सौदेबाजी के दबाव में भी कांग्रेस नहीं आई और उसने द्रमुक नेता करूणानिधि एवं नेशनल कांफ्रेंस नेता फारूख अब्दुल्ला की नाराजी का ज्यादा तरजीह नहीं दी. घटकों से विवाद के चलते मनमोहन अपनी पूरी टीम का गठन भले ही नहीं कर पाए है लेकिन उन्होंने सोनिया और राहुल केम्प को खुश रखने का संदेश अपने इस मंत्रिमंडल गठन में जरूर दिया है. मंत्रिमंडल इस बात का गवाह है कि सोनिया-राहुल का आभामंडल अब कांग्रेस ही नहीं उसके गठबंधन से जुड़े दलों पर भी इस कदर हावी हो चुका है कि लगता है कि सोनिया-राहुल के बगैर अब कांग्रेस और संप्रग में पत्ता भी नहीं हिलेगा. अर्जुन सिंह, हंसराज भारद्वाज और शीशराम ओला को मंत्रिमंडल गठन में तरजीह नहीं मिलने और दस जनपथ के करीबी गुलामनबी आजाद, प्रवण मुखर्जी, अम्बिका सोनी, एसएम कृष्ण आदि पहली खेप में ही अपना स्थान सुरक्षित करने में कामयाब हुए है. वहीं आनंद शर्मा को भी पदोन्नति के रूप में दस जनपथ की गुड बुक का फायदा मिला है.

सोनिया, राहुल का आभामंडल सभी पर पड़ा

206 सीटें जीतकर उत्साह से भरी कांग्रेस ने मनमोहनसिंह के नेतृत्व में पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी दूसरी पारी शुरू कर दी है. हालांकि पिछली सरकार से इसबार कांग्रेस की सीटों से केवल 60 सीटों का ही इजाफा हुआ है और उसे बहुमत के लिये एक बड़ी संख्या का इंतजाम करने के लिये अभी भी अन्य दलों पर निर्भर रहना पड़ा है फिर भी उसका आत्म विश्वास काबिले तारिफ ही है. इसी के चलते 18 सांसदों की बड़ी संख्या वाले द्रमुक और कश्मीर में महत्वपूर्ण भूमिका वाले फारूख अब्दुल्ला की नाराजी भी मनमोहन और सोनिया गांधी को डिगा नहीं पाई तथा इन दलों की ब्लैकमेल की राजनीति को उन्होंने सीधा- सपाट जवाब देकर कोपभवन में जाने को मजबूर कर दिया.

शेष अंतिम पेज पर .....

मजबूत हुए कमलनाथ, चूके कारतूस साबित हुए अर्जुन

केन्द्रीय मंत्रिमंडल की पहली खेप में कमलनाथ ने जहां अपना स्थान सुरक्षित कर मध्यप्रदेश के मजबूत क्षत्रप होने का दावा मजबूती से रखा है वहीं प्रदेश के मजबूत क्षत्रप अर्जुनसिंह को मनमोहन की टीम में स्थान नहीं मिलना उनके चूके हुए कारतूस हो जाना प्रदर्शित करता है. पिछले मंत्रिमंडल में म.प्र. से भले ही पांच सांसद रहे हो मगर प्रदेश से पांच मंत्री कमलनाथ, ज्योतिरादित्य, सिंधिया, अर्जुनसिंह, हंसराज

भारद्वाज और कांतिलाल भूरिया लिये गये थे. इस बार 19 में से म.प्र. को एक स्थान मिला है. हो सकता है दूसरे विस्तार में कुछ सांसद और मंत्री बना जाए, मगर सबसे महत्वपूर्ण बात अर्जुनसिंह को मंत्रिमंडल में जगह न मिलना ही है.अर्जुनसिंह म.प्र. के मजबूत क्षत्रप माने जाते है. उनका अपना जनाधार है कांग्रेस में भी उनके समर्थकों की लम्बी सूची है.

शेष अंतिम पेज पर .....